Kabir ke dohe

Source :-> https://bhajansimran.com/kabir-ke-dohe/

मन मथुरा दिल द्वारिका,काया कासी जाँणी।
दसवाँ द्वार देहुरा, तामें जोति पिछाँणी॥

कबीर दुनियाँ देहुरै,सीस नवाँवण जाइ।
हिरदा भितरि हरि वसैं,तूँ ताही सौं ल्यौ लाइ॥

कर सेती माला ज़पै, हिरदै बहै डंडूल।
पग तौ पाला मै गिल्या, भाजण लागी सूल॥

कर पकरै अंगूरी गिनैं , मन घायै चहुँ ओर।
जांहि फिरांया हरि मिलै ,सो भया काठ की ठौर।।